चतुर्थ धर्म-धम्म सम्मेलन में धर्म और राजव्यवस्था पर होगा विचार

प्रासंगिक मुद्दों पर मंथन के लिए भोपाल में जुटे दुनियाभर के विद्वान, दार्शनिक और चिंतक

दार्शनिक विश्व में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हो चुके सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के द्विवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय आयोजन **धर्म-धम्म सम्मेलन** का चौथा संस्करण **धर्म और राज-व्यवस्था** विषय पर आयोजित हो रहा है। 19 से 21 अक्टूबर तक भोपाल में मध्य प्रदेश विज्ञान एवं तकनीकि परिषद(विज्ञान भवन) के सभागार में आयोजित हो रहे इस सम्मेलन में देश और दुनिया से करीब 200 विद्वान पधार चुके है। सम्मेलन में अमेरिका, थाइलैंड, म्यांमार, कंबोडिया, कोरिया, चीन, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, जर्मनी, ब्रिटेन, श्रीलंका, बांग्लादेश, भूटान और नेपाल से दर्शन के विद्वान और चिंतक पधार चुके हैं। इनके अलावा बड़ी संख्या में देश के विभिन्न राज्यों से भी शिक्षाविद सम्मिलित होने पहुंच रहे हैं।

19 अक्टूबर को **"संवैधानिक नैतिकता के रूप में धर्म", "सुशासन", "लोककल्याणकारी राज्य", "बहुलवाद", "विकास"** जैसे विषयों पर शिक्षाविद, शोधार्थी और विषय विशेषज्ञ गहन मंथन करेंगे। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान 19 अक्टूबर को आयोजित उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में इस धर्म-धम्म सम्मेलन में सम्मिलित होंगे। अध्यक्षता **श्रीलंका महाबोधी सोसायटी के प्रमुख श्री बेनेगेला उपाथिसा नायका थेरो** करेंगे। विशिष्ट अतिथि के तौर पर मध्य प्रदेश सरकार के संस्कृति मंत्री श्री सुरेंद्र पटवा शामिल होंगे।

इसी तरह से 20 अक्टूबर को **"राज्य के निर्माण में धर्म की भूमिका", "सुशासन में धर्म का स्थान", "सामाजिक सुरक्षा और न्याय की स्थापना में धर्म"** विषयों पर विचार मंथन होगा।
धर्म धम्म सम्मेलन के तीसरे और अंतिम दिन **"कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व के निर्वहन में धर्म" तथा "धर्म के माध्यम से सतत विकास"** विषय पर चर्चा की जाएगी। समापन समारोह की अध्यक्षता मध्य प्रदेश के महामहिम राज्यपाल प्रो. ओम प्रकाश कोहली करेंगे। मुख्यमंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि के तौर पर केंद्रीय संस्कृति मंत्री डॉ महेश शर्मा एवं अमेरिकन वैदिक अध्ययन संस्थान के निदेशक वेदाचार्य डेविड फ्रॉले सम्मिलित होंगे। इन विशिष्ट अतिथियों के अलावा स्वामी परमात्मानंद सरस्वती, प्रो नवांग सेमटेन, प्रो. जियो लियांग ली, प्रो. चतुर्वेदी स्वामी, स्वामी अध्यात्मानंद और डॉ एके मर्चेंट भी सम्मिलित हो रहे हैं।

इस तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आयोजन में शुभारंभ एवं समापन सत्र के अतिरिक्त **6 मुख्य सत्र एवं 14 तकनीकी सत्र** होंगे जिनमें **करीब 150 शोधपत्र** पढ़े जाएंगे। सम्मेलन में **धर्म एवं राजव्यवस्था के आचार, विचार और व्यवहार** पक्ष पर शीर्ष नीति नियंता, विचारक, चिंतक और दार्शनिक विद्वान तीन दिन तक चिंतन, मनन और विचार मंथन करेंगे।

आज के विश्व और राजनीति में धर्म को नीति निर्देशक मानते हुए कार्यनीति बनाने की बेहद आवश्यकता है। धर्म को रिलिजन या **संप्रदाय के संकुचित दायरे से देखने के बजाय संपूर्ण विस्तार** में देखे जाने की ज़रुरत है। महात्मा बुद्ध के समय राजा बिंबसार, प्रसेनजित और शुद्धोदन ने धर्म के विविध व्यवहारों से लोक-कल्याण के लिए कार्य किए। निश्चित रुप से ये धार्मिकता समाज हितैषी और

कल्याणकारी थी। आज के समय में सम्राट अशोक के **धम्म के विचार की प्रासंगिकता** पर भी विचार होगा जहां उन्होने मूर्ति पूजा और उस वक्त प्रचलित बलि प्रथा के उलट धर्म (धम्म) को राज्य की सुव्यवस्था और उन्नति के लिए आवश्यक बताते हुए साबित किया कि धर्म का सही अर्थों में उपयोग सुशासन का अभिष्ट मंत्र है।

विज्ञान भवन सभागृह में 19 अक्टूबर को शाम 7 बजे नाटक **"हस्तिनापुर"**तथा 20 अक्टूबर को शाम 7 बजे भरतनाट्यम बैले **"बाली वध"** भी होगा।